मधुबन ओम् शान्ति अंक 330 ☐ जनवरी 2020

पत्र-पुष्प

Happy New Year - 2020

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(14-12-19)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, अपने दिव्य बुद्धि के विमान द्वारा तीनों लोकों और चारों धामों की सैर करने वाले, सदा उड़ती कला के पंखों से उड़ने और उड़ाने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ नये वर्ष की, आने वाले नये युग की सबको बहुत-बहुत उमंग-उत्साह भरी यादप्यार और बधाईयां।

यह नया वर्ष नये ज्ञान और ज्ञान दाता को प्रत्यक्ष करने का वर्ष है। हम सब इस वर्ष को ऐसा उमंग-उत्साह से मनायें जो हमारा प्यारा बाबा विश्व में प्रत्यक्ष हो जाए। वैसे तो बाबा के सभी बच्चे जनवरी मास शुरू होते ही विशेष अटेन्शन रख अव्यक्त वतन की सैर करते, अपनी अव्यक्त स्थिति बनाने लिए अन्तर्मुखी, एकान्तवासी बन तपस्या करते हैं। इस बार तपस्या के लिए विशेष एक मास का होमवर्क भी आप सबके पास मधुबन से इमेल द्वारा भेजा गया है, जिस पर सभी अभ्यास कर रहे होंगे। अब तो बाबा हम बच्चों को अपने समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की विशेष प्रेरणा दे रहे हैं। बाबा कहते बच्चे अब समय और संकल्प की बचत करो, क्यों, क्या के प्रश्नों में उलझने के बजाए साक्षीदृष्टा की सीट पर सेट होकर हर एक के पार्ट को देखो और अच्छे से अच्छा अपना पार्ट प्ले करो। छोटी-छोटी बातों में बुद्धि को फंसाओ मत। सच्चाई प्रेम के स्वरूप से सेवा करते अपनी ऊंचे से ऊंची स्थिति बनाओ। सेवायें स्थिति को बिगाड़ न दें। जैसे बाबा ने किया है, वैसे करते चलो। बुद्धि सदा बेहद में रहे, किसी के बदलने का इंतजार नहीं करो, शुभ भावना देना भी नहीं छोड़ो। जो नेचर हद में लावे उसका त्याग करो। ज्ञान का प्रैक्टिकल स्वरूप है योग, ज्ञान-योग से धारणा फिर वन्डरफुल होती है, फिर सेवा के लिये संकल्प करने की भी बात नहीं है। सेवा में त्याग, तपस्या और सेवा ऑटोमेटिक है। ब्राह्मण वह जो कदम-कदम पर ब्रह्मा बाप को फॉलो करते पदमों की कमाई जमा करते इगोलेस, वाइसलेस है, वही फरिश्तों के समान उड़ती कला में उड़ते रहते हैं।

हम सबको मीठे बाबा ने व्यर्थ सोचने, बोलने, देखने, सुनने से छुड़ाया है। हम सब एक बाबा की सुनते, बाबा को ही देखते और जैसे बाबा देख रहा है, वैसे ही देखते। जैसे बाबा मीठे बोल बोलता है वैसे बोलते हैं। जो मुरली सुनते हैं उसी पर सोचते हैं, वही मुख से रिपीट करते हैं। ऐसे बच्चों पर बाबा भी खुश होता है। जो कुछ बाबा ने हमें दिया है वह सबको देते जाओ तो और ही बढ़ता जायेगा। बाकी कोई भी बातें आती हैं तो उसमें धीरज रखो, शान्त रह सहन करो तो सब सहज हो जायेगा, ठीक हो जायेगा। सारा दिन यही चेक करो कि हमारा बाबा क्या करता है! और हम क्या करते हैं? क्या सदा खुश रह करके सभी को खुश करते हैं? आत्मा इस शरीर में रहते, चलते फिरते अन्दर शान्त रहे, खाते-पीते अनासक्त रहे। ऐसे त्याग-तपस्या से जो सेवा सामने आती है वह हो जाती है। कर्म में आते भी न्यारे और प्यारे हैं, तो उस कर्म से औरों को प्रेरणा मिलती है, यह भी सेवा है। हमारी ऑखें ऐसी हों जो कोई देखके खुश हो जाए, दर्शन करके प्रसन्न हो जाए। ऐसी दृष्टि, ऐसे बोल हों, ऐसी स्थिति हो। अन्तर्मुखी सदा सुखी, अचल अडोल रहें। किसी बात का छींटा भी न लगे। इतना अपने आपको सेफ रखो, साफ रखो। अन्दर से दिल कहे बाबा तेरा शुक्रिया।

बोलो, हमारे मीठे भाई बहिनें ऐसी सच्ची तपस्या चलती रहती है ना! एक दो घण्टे के तपस्वी हो या तपस्वी जीवन है! दिल में सदा बाबा बाबा का आवाज गूंजता रहे, एक बाबा ही दिल में समाया रहे, यही सच्ची तपस्या है।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"इस अव्यक्त मास में सदा फरिश्ता ड्रेस पहनकर रहो"

1) जैसे दिन में भिन्न-भिन्न ड्रेस बदली करते हो, ऐसे बीच-बीच में फरिश्ता ड्रेस पहन लो। बार-बार यह स्मृति इमर्ज करो कि मैं फरिश्ते रूप में हूँ और बापदादा मेरी ड्रेस पर ज्ञान का, शक्तियों का, गुणों का रंग डाल रहे हैं। तो यह चमकीली ड्रेस पहनने से नशा चढ़ेगा और फरिश्ता बनने में मदद मिलेगी।

2) कोई भी सेवा प्रति यह शरीर रूपी वस्त्र का आधार लो, सेवा समाप्त हुई तो इन वस्त्रों के बोझ से (शरीर के भान से) हल्के और न्यारे हो जाने का प्रयत्न करो। जैसे रात को हल्की ड्रेस में सोते हो, ऐसे बुद्धि को हल्का करना अर्थात् हल्की ड्रेस पहनना। हल्की ड्रेस पहनने से फरिश्ते रूप में उड़ते रहेंगे।

3) संगमयुग की रीति है - जैसा कार्य करते हो वैसे टाइटिल प्रमाण अपना स्वरूप याद रखो। जैसा समय वैसा स्वरूप – यह स्वरूप ही आपकी ड्रेस है। सूक्ष्मवतन आकारी वतन मिलने का स्थान है, लेकिन उस स्थान पर मिट्टी के साथ नहीं आ सकते। यह देह मिट्टी है, जब मिट्टी का काम करना है तब करो लेकिन मिलने के समय इस देह के भान को छोड़ दो। जो बाप की ड्रेस वही आपकी ड्रेस हो तभी समान रूप में मिलन हो सकेगा।

4) जैसे बाप निराकार से आकारी वस्त्र धारण करते हैं। आकारी और निराकारी बापदादा बन जाते हैं – आप भी आकारी फरिश्ता ड्रेस, चमकीली ड्रेस पहन कर आओ तब मिलन होगा। यह ऐसी ड्रेस है जो माया के वाटर या फायर प्रूफ है, इस पुरानी दुनिया के वृत्ति और वायब्रेशन प्रूफ है। इतनी बढ़िया ड्रेस आपको दी है, तो अपायन्टमेन्ट के टाइम यह ड्रेस पहन लो। जब दोनों समान चमकीली ड्रेस वाले होंगे और चमकीले वतन में होंगे तब अच्छा लगेगा।

5) जैसे साकार रूप में एक ड्रेस चेन्ज कर दूसरी ड्रेस धारण करते हो, ऐसे यह स्वरूप की स्मृति परिवर्तन कर लो। साकार स्वरूप की स्मृति को छोड़ आकारी फरिश्ते स्वरूप में, फरिश्तेपन की (लाइट की) ड्रेस सेकेण्ड में धारण कर लो। यह अभ्यास बहुत समय से चाहिए तब अन्त समय में सहज शरीर के बंधन से मुक्त हो सकेंगे।

6) संगमयुग पर बापदादा द्वारा सभी बच्चों को भिन्न-भिन्न टाइटल्स की स्थिति रूपी ड्रेस और भिन्न-भिन्न गुणों के श्रृंगार के सेट मिले हुए हैं। जैसी ड्रेस वैसा श्रृंगार का सेट और ऐसे ही सजी-सजाई सीट पर सदा सेट रहो। जैसा समय जैसा कर्तव्य वैसी ड्रेसेज धारण करो।

7) ड्रेस कॉम्पीटीशन में फर्स्ट नम्बर आ जाओ। ड्रेस पहनकर सदा टिप-टॉप रहो। यह विघ्न प्रूफ चमकीली फरिश्ता ड्रेस सदा पहनकर रहो। मिट्टी की ड्रेस नहीं पहनो और सदा सर्व गुणों के गहनों से सजे रहो। विशेष 8 शक्तियों के शस्त्रों से सदा अष्ट शक्ति, सम्पन्न मूर्ति बनकर रहो।

8) व्यर्थ बातें सुनते हुए, देखते हुए होली हंस बन, व्यर्थ छोड़ समर्थ धारण करो। सदा चमकीली ड्रेस में सजे-सजाये सदा सुहागिन होकर रहो। बाप और मैं, तीसरा न कोई। सदा बाप की गोदी के झूले या सर्व प्राप्तियों के झूले में झूलो। संकल्प रूपी नाखून भी मिट्टी में न जाए। नहीं तो आप मिट्टी पोंछते रह जायेंगे और साजन पहुँच जायेगा।

9) हे आशिकों, सदा माशूक समान सम्पन्न और सदा चमकीले स्वरूप में अर्थात् सम्पूर्ण स्वरुप में स्थित रहो। राज्य अधिकारी की स्थिति की ड्रेस बदलकर माँगने वाली, भिखारीपन के स्थिति की पुरानी ड्रेस धारण नहीं करो। सदा एक श्रेष्ठ संग के रंग में रहो।

10) फरिश्तेपन की ड्रेस चमकीली ड्रेस है। यह स्मृति और स्वरूप बनना अर्थात् फरिश्ता ड्रेस धारण करना। यह फरिश्ता ड्रेस अर्थात् फरिश्ता स्वरूप दूर-दूर तक आत्माओं को आकर्षित करेगा इसलिए शरीर भान के मिट्टी की ड्रेस से न्यारे बन चमकीली ड्रेस पहनो, सफलता का सितारा बनो।

11) जैसे बाप अशरीरी है, ब्रह्मा बाप चमकीली ड्रेस में है, फरिश्ता है, तो फालो फादर। स्थूल में देखो कोई आपके कपड़े में मिट्टी लग जाए, दाग हो जाए तो फौरन बदल लेते हो ना! ऐसे ही चेक करो कि सदा चमकीली फरिश्ते की ड्रेस है? जैसा समय वैसा स्वरूप है? अगर नहीं तो फौरन चेक करो और चेंज कर लो।

12) बापदादा डबल लाइट फरिश्ता स्वरूप स्थिति में रहने वाले बच्चों के हर कार्य में मददगार हैं। जितना सेवा में

निमित्त बनने का भाग्य मिलता है उतना डबल लाइट स्थिति से उड़ती कला में उड़ने के विशेष अनुभवी बनो तो सदा खुशी में नाचते रहेंगे और खुशी के महादानी बन खुशी की खान बढ़ाते रहेंगे।

13) फरिश्ता स्थिति डबल लाइट स्थिति है, इस स्थिति में कोई भी कार्य का बोझ नहीं रहता, इसके लिए कर्म करते बीच-बीच में निराकारी और फरिश्ता स्वरूप यह मन की एक्सरसाइज़ करो। जैसे ब्रह्मा बाप को साकार रूप में देखा, सदा डबल लाइट रहे, सेवा का भी बोझ नहीं रहा, ऐसे कर्म करते सदा फरिश्ते ड्रेस में रहो, फालो फादर करो तो सहज ही बाप समान बन जायेंगे।

14) जैसे ब्रह्मा बाप को चलता-फिरता फरिश्ता, देहभान रहित अनुभव किया। कर्म करते, बातचीत करते, डायरेक्शन देते, उमंग-उत्साह बढ़ाते भी देह से न्यारा, सूक्ष्म प्रकाश रूप की अनुभूति कराई, ऐसे फालो फादर करो। सदा देह-भान से न्यारे रहो, हर एक को न्यारा रूप दिखाई दे, इसको कहा जाता है देह में रहते फरिश्ता स्थिति।

15) फरिश्ता सदा उड़ता है, चलता नहीं है। आप सभी भी उड़ती कला में उड़ते रहो इसके लिए डबल लाइट बनो। जो किसी भी प्रकार का बोझ मन में, बुद्धि में है वह बाप को दे दो। चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति को बढ़ाओ। अशरीरीपन का अभ्यास करो। सेकण्ड में कोई भी संकल्पों को समाप्त करने में, संस्कार स्वभाव में डबल लाइट रहो।

16) फरिश्ता स्थिति की ड्रेस पहनने के लिए किसी भी प्रकार के व्यर्थ और निगेटिव संकल्प, बोल वा कर्म से मुक्त बनो। फरिश्ता स्थिति का अनुभव करने के लिए अभी-अभी आवाज़ में आते, डिस्कस करते, कैसे भी वातावरण में संकल्प करो और आवाज से परे, न्यारे फरिश्ता स्थिति में टिक जाओ। अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी फरिश्ता अर्थात् आवाज़ से परे अव्यक्त स्थिति। यही अभ्यास लास्ट पेपर में विजयी बनायेगा।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 13-03-15 *मधुबन*

"बाबा के सच्चे सपूत आज्ञाकारी वफादार ईमानदार और फरमानबरदार बनो"

(दादी जानकी जी की गुल्जार दादी जी से चिटचैट)

जानकी दादी:- दादी हमारे साथ है तो कितनी खुशी की बात है। दादी, बाबा तेरा बनने में सुख मिलता इलाही है..., एक बाबा, एक मुरली, एक मधुबन... और यहाँ हम और दादी वन्डरफुल। दादी आपको कैसे खैंच हुई! जो आप यहाँ आ गई, अभी दादी दो शब्द सुनाओ। सभी दिल से बाबा बाबा कहते हैं परन्तु बाबा जो कहता है वही करने का है ना, वन्डर है ना।

गुल्जार दादी :- सभी के दिल में कौन? बोलो, सबके दिल में कौन? सब क्या कहते हैं - मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा। सबके चेहरे पर क्या दिखाई दे रहा है, हरेक की दिल से आवाज़ निकल रहा है - मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा। अभी बाबा को क्या कहें जो शब्द कहने के हैं वो तो कॉमन है लेकिन हमारा बाबा बहुत-बहुत-बहुत दिल का प्यारा है। सबके दिल में देखो तो क्या याद आता? मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा। बस, बाबा शब्द आते ही मन मुस्कुराने लगता। नयन जो हैं वो बाबा के प्यार में गीले हो जाते और मस्तक चमकती हुई ज्योति बाबा से मुलाकात कितना मीठा करती है। हरेक बच्चे को बाबा कितना दिल से प्यार करता, वो सबके शक्ल में आज आया हुआ है। हरेक के दिल में बार-बार यही आता - ''मेरा बाबा, मेरा बाबा'' और बाबा भी क्या कहता - ''मेरे बच्चे, मेरे बच्चे''। एक एक बच्चे को कितने प्यार से मेरा बच्चा, मेरा बच्चा... सुनाई दे रहा है ना बाबा का शब्द! मेरा बच्चा, मेरी बच्ची। यह बाबा के बोल इन शब्दों ने ही जादू लगा दिया। अभी दिल में है ही क्या, मेरा बाबा। हरेक अपने दिल से कहता है - मेरा बाबा। और हरेक को बाबा रेसपांड देता है - मेरा बच्चा। यह जो रूहरिहान होती है वह बहुत मीठी इस दुनिया से पार ले जाने वाली है। और सारा दिन भी चलते-फिरते दिल में कौन? मेरा बाबा। हरेक अपने दिल की रूची से कहता है - मेरा बाबा और मेरा कहने से जो बाबा की प्रॉपर्टी सो हमारी और जो कुछ हमारे पास पुराना माल है, वो हमने बाबा को दे दिया। बाबा हमको क्या देता और हम बाबा को क्या देते लेकिन देना क्या है! बाबा से लेना ही है। तो देखो आज फुल क्लास है। कितना अच्छा लगता है फुल क्लास, और हरेक कितना

खुश हो रहा है! खुशमिज़ाज सभा देखना हो तो यह देखो। सभी के दिल में कौन? वही शब्द आता है - मेरा बाबा। सिवाए बाबा के और है क्या! बाबा ने क्या कमाल की है - हर बच्चे को अपने दिल में बिठा दिया। जो बच्चे भी कहने लगे मेरा बाबा, बाबा भी कहने लगता है मेरे बच्चे। तो हम बाबा के, बाबा मेरा। कितनी खुशी होती है, जब बाप और बच्चे का मिलन होता है तो दिल में क्या क्या आता है? बस, वो घड़ी कितनी प्यारी है!

जानकी दादी:- अभी दादी आपके बाजू में बैठे ऐसी सकाश आ रही है, बाबा कहता है बच्चे तुम्हारे पीछे बाबा है, सामने लक्ष्य है, लक्ष्मी नारायण का चित्र सामने है। हमको वो बनना है ना। तो बाबा रोज़ जो मुरली में कहता है, समझाता है वो धारणा में लाओ। चारों सबजेक्ट में फुल मार्क्स लो, एक भी सबजेक्ट में कम मार्क्स नहीं हो। ज्ञान क्या कहता है? मेरा कौन है और मैं कौन हूँ! ज्ञान से मैं मेरा में बहुत फर्क आ गया है। अभिमान की अंश नहीं रही है एक दो के लिए, अगर अपने लिए शुभ चिंतक हैं तो सबके लिए शुभ चिंतन है। बाबा ने दिल और दिमाग को ऐसी खुराक दी है जो सभी भाई बहन एक दो को देख मुस्कराते हैं। आपस में एक दो को देखते, दृष्टि की लेन-देन करो, करके तो देखो बहुत खुशी होगी। बाबा ने ऐसे दिल की बातें सुनाई हैं जो आज्ञाकारी कोई अवज्ञा न करे। दूसरा वफादार एक बाबा दूसरा न कोई। इमानदार एक कौड़ी भी निष्फल न हो जाए। यज्ञ सेवा है एक कौड़ी भी नीचे ऊपर न हो। फरमानबरदार माना कोई और अरमान नहीं। तो ऐसा बनने का भाग्य बाबा ने दिया है। यहाँ देखते हैं बाबा, यहाँ देखते हैं भाग्य। जैसे हमको सबसे मिलने का भाग्य है और आप सबको दोनों दादियों से मिलने का भाग्य है।

बाबा हमारा साथी है पर साक्षी होके देखने से बड़ा सुख मिला है। ड्रामा की ऐसी शिक्षा बाबा ने दी है जो हम भाग्यवान, सौभाग्यवान ही नहीं बल्कि पदमापदम भाग्यवान हैं। ऐसे बाबा के बच्चे खुशमिज़ाज बैठे हैं। कदम कदम में पदमों की कमाई करो तो पदमापदमपति बनेंगे क्योंकि ऐसी खुशी हम सतयुग में भी वर्णन नहीं करेंगे। सतयुग में सब नम्बरवार होंगे, पर अभी पुरुषार्थ में नम्बरवन रहें। हम कहते हैं बाबा हमें कुछ नहीं चाहिए, सब खुश रहें। बाबा ने ब्रह्मा मुख से सुनाया है, हमारी जीवन बनाई है, शुद्ध आहारी बनाया है। कभी भी हमनें भूल से भी और कुछ नहीं खाया होगा सिवाए बाबा के भण्डारे के।

मुझे नुमाशाम के टाइम 6 बजे के बाद क्लास में आने की खींच होती है। सबसे मिलना होता है। दादी आज आपको भी खींच हो गई मुझे और ही बहुत खुशी हो गई। अभी खुशी में सब डांस करेंगे।

दादी मुझे परिवार के लिए बहुत प्यार है, बाबा वतन में बैठे अव्यक्त रूप से साकारी भासना दे रहा है। जब पर्सनल कोई मिलते हैं तो मेरा जी चाहता है हरेक को साकार बाबा की भासना ऐसी मिले, जो तुम्हें देखता रहूँ, देखता रहूँ ऐसा अनुभव होवे। बाबा आपको देखते रहें तो दिल कहता है, दुनिया मेरी उसी घड़ी शक्ल देखे मैं किसको देख रही हूँ, कौन मुझे देख रहा है। दुनिया में कोई कोना अभी नहीं रहा है, बाबा की मुरलियों में बाबा की जो प्रेरणा है कोई रह नहीं जावे। तो हम यह कहती हूँ न सिर्फ सन्देश देना है परन्तु हमारी चलन ऐसी हो, बोल ऐसे हो जो हरेक समझे बाबा, बाबा... अन्दर से ऑटोमेटिक निकलें। अच्छा।

दादी जानकी जी - 16-3-15

"सर्वगुण सम्पन्न बनना है तो समाने की शक्ति धारण करो जो किसी का भी अवगुण दिखाई न दे"

मुझे बड़ी खुशी होती है जब आप सब मिल करके ओम् शान्ति कहते हैं। मैं कौन, मेरा कौन? इतने सब बैठे हैं जानते हैं मैं कौन हूँ मेरा कौन है और साथ-साथ यह पहचान आती है कि अब मुझे क्या करने का है? जब 7.30 बजे यह गीत बजता है कि ''जहाँ हमारा तन होगा, वहाँ हमारा मन होगा...'' तो चेक करती हूँ मेरा मन कहाँ है? धन में है, सम्बन्ध में है? कहाँ है! बाबा की वाणी पढ़ते जी चाहता है जो बाबा कहता है वो हमको करना है। यज्ञ सेवा करते भी सारी लाइफ में मैंने कभी कर्मणा सेवा नहीं कहा, यज्ञ सेवा है। कोई भी प्रकार की सेवा

हो, वह यज्ञ सेवा है। यह कर्मेन्द्रियां जिस घड़ी यज्ञ सेवा करती हैं तो हाथ पाँव से जहाँ कदम वहाँ पदमों की कमाई है।

यह 5 अंगुली बहुत अच्छी सेवा करती हैं, यह छोटी है यह मोटी है। यह सहयोगी देती है, यह दृढ़ संकल्प रखते हैं। पाँचों अंगुलियों में पहली अंगुली यह सहयोग देने की निशानी है, थोड़ा भी सहयोग दिया, फिर योग लगता है। फिर विजय का टीका लगायेंगे तो इस अंगुली से। यह अंगुली विज़डम की है। यह एक है तो सब कुछ है। यह है संकल्प रखा यह करना है हो ही जाता है क्योंकि यह दोनों मिल गये आपस में एक बाबा दूसरा यह संकल्प, कितना अच्छा लगता है तो दिल से काम करते हैं।

जब पहले हम आबू में आये तो बाबा ने कहा अपना मन्दिर देखा है? क्योंकि मन मन्दिर है क्योंकि मन में अन्दर सिवाए बाबा के और कोई याद नहीं है। संगमयुग है। झाड़ के चित्र को अच्छी तरह से देखो नीचे से ऊपर तक। झाड़ में नीचे हम तपस्या कर रहे हैं, और बुद्धि में है अभी हम सतयुग की स्थापना के अर्थ तपस्या कर रहे हैं। तपस्या अच्छी तभी लगती है जब त्याग वृत्ति है। त्याग, तपस्या, सेवा। त्याग क्यों करते हैं? क्या चाहिए? काम नहीं, कोई क्रोध नहीं, लोभ नहीं, मोह नहीं, अहंकार की अंश नहीं। यह 5 विकार जो नर्क का द्वार थे, उनसे छूट गये। दुनिया को देखते हैं, फिर अपने को देखते हैं, दुनिया क्या कर रही है और हम क्या कर रहे हैं कितने हम दुनिया से न्यारे हैं और बाबा के प्यारे हैं कितने खुश हैं! न्यारे हैं प्यारे हैं। बाबा ने हमको क्या से क्या बना दिया इसलिए दिल कहे मेरा बाबा।

सभी के दिल में है, कल हमारे बाबा से मिलने का दिन है। हरेक को अन्दर खींच है, बाबा को भी जरुर खींच होती है। कल इस टाइम बाबा हमारे साथ होगा, कैसा वायुमण्डल होगा, उसके लिए क्या तैयारी करनी है? आज इस डायमण्ड हॉल में बाबा के हीरो बच्चे, हीरो पार्टधारी पहुँचे हैं, सब कितने भाग्यवान हैं। बाबा की दृष्टि, बाबा के बोल, बाबा से मिलन महासुखकारी है। हर एक को अन्दर में बहुत खुशी है। बाबा मेरा है, मैं बाबा की हूँ। बाबा कहे तुम मेरे बच्चे हो, मैं कहूँ आप मेरे बाबा हैं। सभी के दिल से निकलता है मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा। ऐसा बाबा इतना अच्छा है गोद बिठाके गले लगाता है। पहले एडाप्ट करता है माना गोद में बिठाता है, तो एडाप्टेड बच्चे प्यारे लगते हैं। गले लगाने के लिए माला बनाने के लिए फिर बाबा पलको में बिठाता है, साथ ले जाता है तो कितना अच्छा बाबा है यह! वो दिन भी प्यारे जब बाबा साथ हमारे... कितने प्यारे दिन हैं। अभी हम क्या बताऊं, सारी जीवन में देह सहित देह के सब सम्बन्ध से न्यारे और बाबा के प्यारे हैं। बाबा इतना प्यारा लगता है जो दिलवाला मन्दिर में जगह दे दी है, दिलवाले ने अपने साथ बिठाया है, बाबा साथ हमारे। तो जी चाहता है यह दृष्टि बाबा की लेते ही रहें...।

बाबा शब्द दिल से निकलता है क्योंकि वह हमारा शिक्षक भी है, रक्षक भी है। एक तो कहता है गुणों को धारण करो, धारणा चलन से करनी है। सर्वगुणों में सम्पन्न बनना है। वो गुण धारण करने के लिए बाबा की शक्ति मिलती है। बुद्धि से बाबा को याद करने से समाने की शक्ति आ जाने से कोई का भी अवगुण दिखाई नहीं पड़ता है, सुनाई भी नहीं पड़ता है इसलिए टॉक नो इविल, हियर नो इविल, सी नो इविल पर इससे भी अच्छा लगता है थींक नो इविल। ऐसे बाबा ने बनाया है सोचना भी व्यर्थ न हो। भाग्यवान हैं, कर्मेन्द्रियाँ ऐसी कन्ट्रोल में हैं जो जबरदस्ती नहीं, अपने आप ईश्वरीय सेवा में मैं कभी नहीं कहेगी, मैं बिजी थी... इन कर्मेन्द्रियों से कर्म ऐसे करो जो मुझे देख और भी ऐसे करने लग जाएं यह बड़ी सावधानी भी है, तो शिक्षा भी है क्योंकि कर्म पर ध्यान देना है, अपना रिकॉर्ड सबको रिगार्ड देने का अच्छा रखना है। रिस्पेक्ट देने में ही रीयल्टी और रॉयल्टी है। स्वमान में रहना सम्मान देना इज़ी है ना। स्वमान में रहना आता है और सम्मान देना, ये नेचुरल नेचर हो जाए, यह रॉयल्टी है क्योंकि पढ़ाई का समय यह है, सतयुग में यह पढ़ाई नहीं होगी, जो पढ़ाई से कमाई कर रहे हैं उनसे भविष्य बन रहा है इसलिए बुजुर्ग हुए तो क्या, फिर भी पुरुषार्थ में कभी रिटायर नहीं होना है, अथक रहना है, थकना नहीं है तो अच्छा लगता है क्योंकि कमाई जमा हो रही है ना। पुरुषार्थ क्या है मेहनत नहीं है सिर्फ मोहब्बत है, मेरा बाबा मीठा बाबा, यह मेहनत है क्या! ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी 17-3-15

"प्रवृत्ति सम्भालते अनासक्त वृत्ति और नष्टोमोहा रहें, यह भी बाबा के बच्चों की कमाल है"

ओम् शान्ति। मीठे मीठे बाबा ने मैं और मेरा से छुड़ा दिया। अब अन्दर से आवाज़ आता है ''मेरा बाबा''। बाबा कहते ''मेरे बच्चे''। मात पिता बापदादा दोनों कितने प्यार से हमारी पालना कर रहे हैं, पढ़ा भी रहे हैं। माँ के रूप में, बाप के रूप में, शिक्षक, सखा, सतगुरू के रूप में...कितने सुन्दर अनुभव करा रहे हैं। आप सभी यज्ञ सेवा भी करते हो, बाबा से भी मिलते हो, दोनों फायदा लेते हो। बाबा के मिलन में बस, वाह बच्चे वाह, वाह बाबा वाह! क्यों, क्या छूट जाता है इसलिए बाप और बच्चों का कितना आपस में प्यार है, वन्डर है। बाबा का बच्चों से, बच्चों का बाबा से और बच्चों का आपस में, बाबा कहते हैं यह जो स्नेह भरा सम्बन्ध है यह बहुत सुखदाई है। जी चाहता है ऐसा मिलन मनाते रहें और सेवा भी कितनी अच्छी होती है।

यह बना बनाया ड्रामा है, तो ड्रामा की जो नॉलेज मिली है, आत्मा अविनाशी है, कल्प पहले ड्रामा में हरेक का जो पार्ट है वह बजा रहे हैं। ज्ञान की इतनी अच्छी बातें बाबा सुनाता है, कैसे सुनाया और किसको सुनाया! जिन्हों में संगमयुग का ज्ञान है, वो कितना ऊंचा पार्ट कल्प-कल्प बजा रहे हैं। यह ड्रामा अनादि बना बनाया है इसलिए दिल कहता है, जैसे बाबा को याद करने के बिगर सारा दिन और कुछ याद नहीं आता है, ऐसे ड्रामा भी सदा याद रहता है। मैं अपने से पूछती हूँ क्या याद आता है? बाबा के कई युगल बच्चे घर में रहते हुए, प्रवृत्ति सम्भालते हुए, अनासक्त वृत्ति, नष्टोमोहा है। विदेश में भी कई विदेशियों को देखा साथ रहते हुए नष्टोमोहा हैं। कितने भाग्यवान हैं! ऐसे कई भारत में चाहे विदेश में देखा है, बच्चे को अपना बच्चा नहीं समझते हैं, कहते हैं यह बाबा का बच्चा है। कभी नहीं बच्चों में मोह देखा, नहीं तो कम से कम गृहस्थियों को लोभ और मोह होता है। भले काम, क्रोध छोड़ देंगे, पर लोभ मोह थोड़ा पैसा, थोड़ा बच्चे में मोह रहता ही है, परन्तु बाबा का बनने के बाद कईयों ने उसे भी छोड़ दिया है। वन्डरफुल हैं।

तो सेवा का फल है, याद का बल है। जितनी बाबा की याद है उतना बल मिलता है, ऐसे ही जितनी सेवा करते हैं उतना फल मिलता है। यह भी ड्रामा अनुसार हरेक का नूँधा हुआ है। उस नाटक में पार्टधारियों को अदली बदली कर सकते हैं, पर इस ड्रामा में एक्टर चेंज नहीं हो सकता है, बना बनाया ड्रामा है। बाबा की ऐसी ऐसी बातें दिल में लग जाती हैं, तो दिल में जब बाबा की बातें लग जाती है तो एक बाबा ही याद रहता है। ओम् शान्ति।

गुल्जार दादी जी 15-7-06

"ज्वालामुखी योग सर्व शक्तियों से सम्पन्न है, उसमें सेवा का स्वरूप भी इमर्ज है"

(गुल्जार दादी जी से प्रश्न उत्तर)

प्रश्नः जैसे हम अपनी आदि अनादि पवित्रता की ओर लौटते हैं तो हम अपने इनोसेन्ट (भोलेपन) की ओर लौटते हैं, दादी जी हम आपकी यह विशेषता अनुभव करते हैं और प्रंशसा भी करते हैं। तो कृपया हमें अपनी इनोसेन्ट (भोलेपन) के विषय में बताएं जिससे हम भी उसे धारण कर सकें।

उत्तरः हम हर व्यक्ति के योगदान को महत्व दें, उनकी विशेषताओं को देखें और कार्य में लगायें। उनसे प्रभावित न हों। मुझे केवल साक्षी दृष्टा हो कर देखने की आवश्यकता है तथा आत्म-अनुभूति एवं परमात्म अनुभूति दोनों की स्थिति में रहें तो इनोसेन्ट रह सकते हैं।

प्रश्नः अब हमें कितने समय के लिए स्व-पुरुषार्थ की योजना बनानी चाहिए? कितना समय बचा है?

उत्तरः बाबा ने हमें कोई निश्चित तारीख नहीं बताई है, इसलिए हमें सदा तैयार एवर-रेडी रहना चाहिए। अन्तिम पेपर बिना बताये आयेगा और वह हमें नम्बरवार बना देगा। इसलिए हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझकर पुरुषार्थ करना चाहिए।

भविष्य की योजनायें भल बनाओ पर अन्दर से एवररेडी रहो।

प्रश्नः हम सब उस घड़ी के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं जब कि संसार का रूप बदलेगा, हर व्यक्ति की इस बात में दिलचस्पी है कि यह कैसे होगा? दादी जी ने एक बार यह साक्षात्कार किया था, वह एक क्षण इस संसार में है और दूसरे क्षण नई दुनिया में, जहाँ चारों ओर सोने के महल हैं तो क्या आने वाले कुछ वर्षों में यह परिवर्तन होगा इसमें कुछ समय लगेगा या यह कोई जादू के जैसा चमत्कार होगा?

उत्तरः यह कोई जादू की बात नहीं है कि दुनिया जादू से बदलेगी। यह एक प्रक्रिया है, एक परिवर्तन या एक क्रान्ति हमें जो अभी करना है। इसके लिए हमें न्यारा और प्यारा बनना है। बाबा ने बताया है कि आने वाले समय में भटकती हुई भूत प्रेत आत्माओं का, प्रकृति का तथा ब्राह्मणों का परस्पर हिसाब-किताब चुक्तू करने का समय होगा। महत्वपूर्ण बात यह है कि हम उस समय सबसे न्यारे व प्रेम स्वरूप होकर देखें कि क्या हो रहा है? ब्राह्मणों की शक्तिशाली स्थिति का प्रकृति पर प्रभाव पड़ेगा। एडवांस पार्टी उस समय प्रत्यक्ष होगी और हम उनका प्रभाव अन्य आत्माओं पर देख सकेंगे। उस समय विभिन्न प्रकार की नकारात्मकता का प्रभाव देखेंगे और दूसरी तरफ सकारात्मकता का प्रभाव जो परिवर्तन करेगा उसे देखेंगे। एक सन्देश में बाबा ने कहा था कि एडवांस पार्टी अपना कार्य कैसे कर रही है और किस प्रकार बाबा के बच्चों की शक्तिशाली स्थिति अपना कार्य कर रही है। हर चीज को बदलना ही है प्रकृति, मनुष्य, परिस्थितियाँ सब बदलेंगी।

प्रश्नः वर्तमान समय हमें अपने पुरुषार्थ को किस बिन्दु पर केन्द्रित करना है?

उत्तर : हम ज्ञान को अपने व्यवहारिक जीवन में लायें जिससे हमारे चेहरे, चलन में परिवर्तन नज़र आए। उदाहरण के तौर पर बाबा ने हमें बताया है कि हम सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाएं, किसी भी बात में प्रश्नचिन्ह न हो। बाबा हमसे यह चाहते हैं कि अन्य व्यक्ति जब हमें देखें तो उन्हें अनुभव हो कि ये लोग साधारण नहीं हैं यह विशेष आत्मायें हैं। इसके लिए विशेष योग के शक्ति की आवश्यकता है, जिससे कि हम ज्ञान के बिन्दुओं को जीवन में पूर्ण रूप से धारण कर सकें। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

"रुहानियत की शक्ति से एकरस स्थिति बनाओ"

1) हम सब अभी मीठे बाबा के साथ फरिश्तों की दुनिया में उड़ना चाहते हैं इसलिए नीचे में आकर, व्यक्तियों को देख व्यक्तित्व में अपना समय, शक्ति खर्च नहीं करो। कोई भी बात व्यक्त में आकर करेंगे तो जैसे पत्थर तोड़ेंगे लेकिन ऊपर से उड़ जाओ तो सभी बातें सहज ही क्रॉस हो जायेंगी माना निवारण हो जायेंगी। तो जितना भी टाइम साइलेन्स में बैठो उतना समय गहरा अनुभव करो कि हम इस देह से परे उड गये हैं। उड़ना माना विदेही बन फरिश्तों की दुनिया में पहुँच जाना। जितना लाइट बन लाइट की दुनिया में, फरिश्ते स्थिति में रहने का अभ्यास करेंगे उतना आटोमेटिक मैं-पन निकल जायेगा। और जितना यह अभ्यास करेंगे उतना जो भी कोई कमजोरी होगी, अपवित्रता के संस्कार आदि जो भी कुछ है वह सब खत्म हो जायेंगे। तो यही शुभ संकल्प करना है कि 1. मुझे बाबा के समान सम्पन्न फरिश्ता बनना है। 2. हमें इस विश्व की स्टेज पर अपने चलन-चेहरे, संकल्प, बोल से बाबा को प्रत्यक्ष करना है। हमारे वायब्रेशन ऐसे हों जो सभी कहें कि आप धन्य हैं। आप लोगों को भगवान ने ही पढ़ाया है और पढ़ा भी रहा है। यह संस्था देहधारियों की नहीं है, यह संस्था गुरू-चेलों की नहीं है परन्तु सभी ब्रह्माकुमार/ब्रह्माकुमारियाँ परमात्मा से पढ़ाई पढ़के परमात्म प्यार में लवलीन होने वाले हैं।

2) हमें यह बहुत नशा है कि हम इस संगम पर कितने लक्की हैं, कितने महान भाग्यवान हैं जो वरदाता बाप ने हमें सर्व वरदानों से भरपूर किया है। लोग कृपा मांगते, हमें तो पल-पल, कदम-कदम पर बाबा वरदानों से भरपूर कर रहा है। तो क्या यह दिल में नहीं आता कि हम ऐसा भरपूर बन, परम आनन्द का अनुभव करें। हम प्रभु को अर्पण हैं। कोई पूछे तो हम छाती पर हाथ रखकर कहते हैं कि हमने परमात्मा को पाया है।

3) माया की शक्ति रावण का राज्य अब पूरा हुआ। अब उसकी विदाई कर दो। अन्त में उसे मुँह झुका के ही जाना है।

अभी तुम्हें जितना सामना करना है, कर ले, मैं तुम्हें पांव में झुकाने वाला हूँ। ऐसी नज़रे तेज हों, इन नयनों में बाबा की इतनी शक्ति भरकर रखो जो मज़ाल है यह नयन कहाँ नीचें देखें। कोई कभी कहता जरा दृष्टि चंचल होती है, तो हम कहती हूँ याद करो भगवानुवाच - हे मेरे नज़रों से निहाल होने वाले बच्चे। तो बोलो, हे पाण्डव इतनी शक्ति से भरपूर हो? हम निहाल हो गये। बाबा की नज़रों में हम हैं, हमारी नज़रों में तुम हो। चाहे कहाँ भी रहें, किधर भी रहें, कुछ भी मिले, कुछ भी खायें। ऐसी अपनी निहाल स्थिति हो।

4) बाबा कहते हैं तुम मौलाई मस्ती में रहो, हम हैं योगी, हमें कौन पहचानें! ऐसी मस्ती अपने में जमा करो। हम हैं परमात्म तख्त पर बैठे हुए रत्न। प्रभु के दिलतख्त के रत्न हैं, हम कोई तख्ते वाले नहीं हैं। खुद से पूछो कि सचमुच मुझे यह नशा है? हम दिलतख्त के मालिक हैं, हम बाबा के दिलतख्त पर बैठे हैं। मेरे दिलतख्त में बाबा, बाबा के दिलतख्त में हम बच्चे हैं इससे बड़ा वरदान हमें और क्या मिलेगा? ऐसा इतना नशा चढ़ता है? इतनी अन्दर से खुशी और अतीन्द्रिय सुख की मस्ती रहती है? ऐसे परमात्म प्यार में लवलीन रहते हैं? यह नशा अमृतवेले योग में सबको निरन्तर चढाते रहना चाहिए।

5) बाबा कहते हैं तुम्हें बेहद का वैराग्य चाहिए। हमारे लिए पुरानी दुनिया मर गई है तो और हमें क्या चाहिए? क्योंकि बाबा ने तो हमको बेहद का बादशाह बनाया, बाकी हमें क्या चाहिए! यह तो सेवायें हैं। आप जो हमें सेवायें देंगे वह हम करते हैं, करते रहेंगे बाकी दिल में निरन्तर तू ही तू, तेरे बिना कोई दिल में नहीं है। ऐसी अपनी पॉवरफुल स्थिति बनाओ। हमारे को बाबा ने ऐसे वरदान देकर रखा है, जो बाबा के वरदानों में ही सदा रात-दिन पलते, अपार खुशी आनन्द मौज में रहते हैं। हम हैं योगी लोग, तो हमें क्या चाहिए! कोई लोभ नहीं, कोई मोह नहीं... फिर यह देह-अभिमान किसलिए! जब देह भी तुम्हारी है तो उसका अभिमान कौनसा है। बाबा ने इतना अथाह मान शान दिया है जो इससे बड़ा और कोई मान शान हो नहीं सकता है। तो अपने ऊंचे शान में रहो और कोई मान शान में नहीं रहो। इसलिए सबसे पहला चाहिए स्वयं के संकल्पों का मौन। यह अभ्यास करना है मन का मौन माना संकल्पों का मौन। बन जाओ विदेही।

6) हम हैं अवतरित हुई आत्मा क्योंकि पुराना वह चोला सब कुछ भूल गया है इसलिए शिवबाबा ने जैसे प्रवेश किया है वैसे हमें भी बाबा ने अवतरित कराके वह नशा दिया है। अवतार माना ही शुद्ध। तो पास्ट का जन्म मर गया।

7) आज्ञाकारी बच्चे का अर्थ ही है कि बाबा की श्रीमत के विपरीत संकल्प भी न चलें। हम बाबा के कदम पर कदम रख चलने वाले आज्ञाकारी बच्चे हैं। आज्ञाकारी हो, श्रीमत पर चलने वाले ही सभी से दुआयें प्राप्त करेंगे। हमारा तो अनुभव यही है कि हम निरन्तर बाबा के संकल्प से भी, बोल से भी आज्ञाकारी रहे हैं। कभी बाबा की श्रीमत के खिलाफ मनमत का संकल्प भी नहीं आया। यह बाबा की अपार दुआओं से रिकार्ड रहा है। तो जितना आज्ञाकारी रहेंगे उतना दुआओं के पात्र बनेंगे।

8) हर एक चेक करो कि हमारे मन में कहाँ तक शुद्ध संकल्प चलते हैं? कहाँ तक हम मन का मालिक राजा बन, मन वजीर को बाकायदे शुद्ध संकल्पों में, मनन-चिंतन में रखते हैं? या मैं-मैं के देह-अभिमान में व्यर्थ संकल्प चलते हैं? स्व के बदले पर को (दूसरे को) देखते-सोचते, संकल्प करते या ज्ञान सागर बाप के ज्ञान के खज़ाने का मनन करते हैं? मन के संकल्प सर्व प्राप्तियों में मगन रहते हैं? सर्व प्राप्तियों के खज़ानों को पाकर अपार खुशियों में रहते हैं?

9) मन के संकल्प पॉजिटिव चलते या निगेटिव चलते? हर प्रकार के निगेटिव थॉटस् को परिवर्तन कर पॉजिटिव सोचो। जितना-जितना पॉजिटिव सोचेंगे उतना मन की शुद्धि होती जायेगी, एकाग्रता बढ़ती जायेगी। पॉजिटिव में भी स्व का चिंतन विशेष करना है। पर को देखने के बदली स्व को देखो।

10) आप यह कभी नहीं सोचो कि मैं सेवाधारी हूँ परन्तु आप ईश्वरीय सेवाधारी हैं। तो हमारा हर संकल्प, हर बोल, हर कदम सेवा में है या ईश्वरीय सेवा में है? यदि मैं सेवा में हूँ तो भी कहीं देह-अभिमान या मैं-पन आ जाता है। लेकिन मैं हूँ ही ईश्वरीय सेवा पर तो मेरा जो भी खाता है वह बाबा की दरबार में जमा है। तो हर एक अपना ईश्वरीय खाता चेक करो।

11) बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए हमें स्वयं में क्या धारणा करनी है? कई बार बाबा ने मुरली में कहा है तुम्हारा संकल्प, बोल, तुम्हारा चेहरा ही बाप का साक्षात्कार करायेगा। यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी बाबा ने हम सबको दी है कि तुम्हें बाप को प्रत्यक्ष करना है, उसके लिए खुद को देखो कि मैं बाप समान सम्पन्न बना हूँ? बाप समान सम्पन्न बनना माना ही सर्व विघ्नों से ऊपर निर्विघ्न अवस्था बनाना। सम्पन्न बनने का अर्थ है कि सर्व कमियों-कमजोरियों को समाप्त करना है।

12) जैसे पढ़ाई में परीक्षा के दिन होते तो होशियार स्टूडेन्ट का लक्ष्य होता कि मुझे फर्स्ट डिवीजन में पास होना है, पास विद आनर बनना है। जब हम पास विद ऑनर्स हों तब तो धर्मराज की सजाओं से मुक्त हों। धर्मराज बाबा हमारा स्वागत करे। बाबा हमें अपनी भुजाओं में वेलकम करे। बाबा कहे ओ मेरे समान बच्चे! आओ। बाबा के समान की हमें मार्क्स मिलें। अच्छा - ओम् शान्ति।